Imaam Abu Hanifa Ka Husne Sulook (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 222
Weekly Booklet : 222

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "ग़ीबत की तबाह कारियां" की
एक क़िस्त बनाम

इमाम अबू ह़नीफ़ा का ह़ुस्ने सुलूक

सफ़ह़ात 21

रूई वाले ने ख़ियानत की 04
दुकानदारों की आपसी ग़ीबत की 10 मिसालें 07
इमामे आ'ज़म का अपने गुस्ताख़ के साथ ह़ुस्ने सुलूक 10
मैं नमाज़ से भागता था 14

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **इमाम अबू ह़नीफ़ा का हुस्ने सुलूक**
सिने त़बाअ़त : रबीउ़ल आख़िर **1443** हि., नवम्बर **2021** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

इमाम अबू ह़नीफ़ा का ह़ुस्ने सुलूक

येह रिसाला (**इमाम अबू ह़नीफ़ा का ह़ुस्ने सुलूक**) शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद1, गुजरात

MO. 9898732611 • Email :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून किताब ''ग़ीबत की तबाह कारियां'' सफ़ह़ा 294 ता 310 से लिया गया है।

इमाम अबू ह़नीफ़ा का हुस्ने सुलूक

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 19 सफ़ह़ात का रिसाला ''**इमामे अबू ह़नीफ़ा का हुस्ने सुलूक**'' पढ़ या सुन ले, **इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के सदक़े हमेशा ज़बान का दुरुस्त इस्ति'माल करने और ग़ीबत व चुग़ली से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर सो मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत **शुहदा** के साथ रखेगा। (مجمع الزوائد، 10/235، حدیث:17298)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾1﴿ दो ग़ीबत करने वालियों की ह़िकायत

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है **अल्लाह** पाक की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बरें देने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को एक दिन **रोज़ा** रखने का हुक्म दिया और इर्शाद फ़रमाया **:** जब तक मैं इजाज़त न दूं, तुम में से कोई भी इफ़्त़ार न करे।

लोगों ने **रोज़ा** रखा। जब शाम हुई तो तमाम सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان एक एक कर के हाज़िरे ख़िदमते बा बरकत हो कर अ़र्ज़ करते रहे : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं रोज़े से रहा, अब मुझे इजाज़त दीजिये ताकि मैं **रोज़ा** खोल दूं। आप صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे इजाज़त मर्हमत फ़रमा देते। एक सहाबी رَضِیَ اللهُ عَنۡه ने हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दो औ़रतों ने **रोज़ा** रखा और वोह आप صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में आने से ह़या महसूस करती हैं, उन्हें इजाज़त दीजिये ताकि वोह भी **रोज़ा** खोल लें। **अल्लाह** करीम के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से रुख़े अन्वर फैर लिया, उन्हों ने फिर अ़र्ज़ की, आप صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर चेह्रए अन्वर फैर लिया, उन्हों ने फिर येही बात दोहराई आप صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर चेह्रए अन्वर फैर लिया, वोह फिर येही बात दोहराने लगे आप صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर रुख़े अन्वर फैर लिया, फिर **ग़ैबदान** रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए) इर्शाद फ़रमाया : "उन दोनों ने **रोज़ा** नहीं रखा वोह कैसी रोज़ादार हैं वोह तो सारा दिन लोगों का गोश्त खाती रहीं ! जाओ उन दोनों को हुक्म दो कि वोह अगर रोज़ादार हैं तो क़ै कर दें।" वोह सहाबी رَضِیَ اللهُ عَنۡه उन के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें **फ़रमाने शाही** صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनाया। उन दोनों ने क़ै की, तो क़ै से जमा हुवा ख़ून निकला। उन सहाबी رَضِیَ اللهُ عَنۡه ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में वापस हाज़िर हो कर सूरते ह़ाल अ़र्ज़ की। **मदनी आक़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, अगर येह उन के पेटों में बाक़ी रहता, तो उन दोनों को **आग** खाती। (क्यूं कि उन्हों ने ग़ीबत की थी)

(ذم الغیبۃ لابن ابی الدنیا، ص72، رقم:31)

एक और रिवायत में है कि जब सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन सहाबी رَضِیَ اللهُ عَنْه से मुंह फैरा तो वोह सामने आए और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह दोनों प्यास की शिद्दत से मरने के क़रीब हैं। **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया : उन दोनों को मेरे पास लाओ। वोह दोनों हाज़िर हुईं। **सरकारे आ़ली वक़ार** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक पियाला मंगवाया और उन में से एक को हुक्म फ़रमाया : इस में क़ै करो ! उस ने ख़ून, पीप और गोश्त की क़ै की, ह़त्ता कि आधा पियाला भर गया। फिर आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दूसरी को हुक्म दिया कि तुम भी इस में क़ै करो ! उस ने भी इसी त़रह़ की क़ै की, यहां तक कि पियाला भर गया। **अल्लाह** के प्यारे रसूल, सय्यिदा आमिना के गुलशन के महक्ते फूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **इन दोनों ने अल्लाह पाक की ह़लाल कर्दा चीज़ों** (या'नी खाने, पीने वग़ैरा) **से तो रोज़ा रखा मगर जिन चीज़ों को अल्लाह पाक ने** (इ़लावा रोज़े के भी) **ह़राम रखा है उन** (ह़राम चीज़ों) **से रोज़ा इफ़्त़ार कर डाला !** हुवा यूं कि एक लड़की दूसरी लड़की के पास बैठ गई और दोनों मिल कर लोगों का गोश्त खाने (या'नी ग़ीबत करने) लगीं। (مسند امام احمد، 9/125، حدیث:23714)

इ़ल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इस ह़िकायत से रोज़े रोशन की त़रह़ वाज़ेह़ हुवा कि **अल्लाह** पाक की अ़त़ा से हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **इ़ल्मे ग़ैब** ह़ासिल है और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने ग़ुलामों के तमाम मुआ़मलात मा'लूम हो जाते हैं। जभी तो उन लड़कियों के बारे में मस्जिद शरीफ़ में बैठे बैठे **ग़ैब की ख़बर** इर्शाद फ़रमा दी। इस ह़िकायत से येह भी पता चला कि

ग़ीबत और दूसरे गुनाहों का इरतिकाब करने से बराहे रास्त इस का असर रोज़े पर भी पड़ सकता है जिस की वज्ह से **रोज़े** की तक्लीफ़ ना क़ाबिले बरदाश्त हो सकती है। बहर हाल **रोज़ा** हो या न हो, **ज़बान** क़ाबू ही में रखनी चाहिये वरना येह ऐसे गुल खिलाती है कि तौबा !

सरवरे दीं लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर नफ़्सो शैतां सय्यिदा ! कब तक दबाते जाएंगे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾2﴿ ग़ीबत से बाज़ रखने का हसीन अन्दाज़

हज़रते सुफ़्यान बिन हुसैन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه कहते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना इयास बिन मुआविया رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पास बैठा हुवा था, इतने में एक शख़्स क़रीब से गुज़रा, मैं ने उस की **बुराई** बयान करना शुरूअ़ कर दी, उन्हों ने कहा : ख़ामोश ! फिर फ़रमाने लगे : सुफ़्यान ! क्या तुम ने **रूमियों** और **तुर्कों** के ख़िलाफ़ जंग की है ? जवाब दिया : नहीं। वोह बोले : तुर्क और रूमी तो तुम से बच गए लेकिन एक **मुसल्मान** भाई महफ़ूज़ न रह सका (या'नी देखते ही तुम ने उस की **ग़ीबत** शुरूअ़ कर दी !) हज़रते सुफ़्यान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه कहते हैं : (मेरा दिल चोट खा गया और) इस के बा'द मैं ने कभी किसी की **ग़ीबत** और आबरू रेज़ी नहीं की। (تنبیہ الغافلین، ص88) **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

ऐ आशिक़ाने रसूल ! जब भी हमारे सामने कोई **ग़ीबत** वग़ैरा का इरतिकाब करे तो मुम्किना सूरत में उसे समझाना चाहिये कि समझाना राएगां नहीं जाता। रब्बे काएनात पारह 27 **सूरतुज़्ज़ारियात** आयत नम्बर 55 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۵﴾
(پ27، الذّٰریٰت:55)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है।

अ़मल का हो जज़्बा अ़ता या इलाही गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 102)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴿3﴾ रूई वाले ने ख़ियानत की !

एक नेक शख़्स ने अपनी रफ़ीक़ए ह़यात (या'नी बीवी) के लिये रूई ख़रीदी। जब घर पहुंचा तो वोह कहने लगी कि **रूई बेचने वालों** ने आप के साथ **ख़ियानत** (ठगबाज़ी) की है। उस शख़्स ने औ़रत को फ़ौरन त़लाक़ दे दी ! उस आदमी से जब इस का सबब पूछा गया तो कहा : मैं एक ग़ैरत मन्द इन्सान हूं, मुझे ख़दशा लाह़िक़ हुवा कि बरोज़े क़ियामत अगर **रूई बेचने वाले** इस **ग़ीबत** (व तोहमत) की वज्ह से इस से अपने ह़क़ के त़लब गार हुए तो कहीं अहले महशर येह न कहें कि देखो ! फ़ुलां की बीवी से **रूई बेचने वाले** अपना ह़क़ मांग रहे हैं ! इस लिये मैं ने उसे त़लाक़ दे दी ! (تنبیہ الغافلین، ص89)

ताजिरों की ग़ीबत की 17 मिसालें

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! किसी क़ौम या महकमे की **ग़ीबत** करना मसलन कहना : "पोलीस वाले रिश्वत ख़ोर होते हैं।" येह गुनाहों भरी **ग़ीबत** नहीं क्यूं कि महकमए पोलीस या क़ौम या ग्रूप के अन्दर अच्छे बुरे दोनों त़रह़ के लोग होते हैं अलबत्ता किसी क़ौम या महकमए पोलीस के हर हर फ़र्द की बुराई मक़्सूद हो तो ज़रूर **ग़ीबत**

है। मज़्कूरा ह़िकायत में किसी मख़्सूस रूई वाले का नहीं मुत्लक़न "रूई वालों" का ज़िक्र है। इस लिह़ाज़ से तो येह **ग़ीबत** न हुई मगर हो सकता है कि उस गाउं में रूई की दो या तीन ही दुकानें हों और उस औ़रत ने जो **ग़ीबत** भरी गुफ़्तगू की इस के सियाक़ो सबाक़ से उस नेक आदमी ने येही मुराद समझी हो कि वोह हमारे यहां के हर हर रूई वाले को ख़ाइन व ठग कह रही है लिहाज़ा ख़ौफ़े क़ियामत के सबब फ़ौरन त़लाक़ दे दी हो। وَاللّٰہُ اَعلَمُ وَرَسُولُہٗ اَعلَم صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم۔

बहर ह़ाल इस ह़िकायत से वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो बिला किसी मस्लह़ते शर्ई बात बात पर ताजिरों की **ग़ीबत व तोहमत** के मुतअ़ल्लिक़ बिला तकल्लुफ़ इस त़रह़ के जुम्ले कहते रहते हैं : ✻ इस ने ठग लिया ✻ ठगी है ✻ ठगिया है ✻ गाहकों को लूटता है ✻ नफ़्अ़ ज़ियादा लेता है ✻ इस का माल सब से महंगा होता है ✻ धोकेबाज़ है ✻ मिलावट करता है ✻ तोल में डन्डी मारता है ✻ चिकनी चुपड़ी बातें कर के गाहक को फांस लेता है ✻ बहुत लालची है सब से आख़िर में दुकान बन्द करता है ✻ कपड़ा खींच कर नापता है ✻ उधार माल ले कर लौटाने का नाम नहीं लेता ✻ इस से क़र्ज़ की वुसूली आसान नहीं, धक्के बहुत खिलाता है ✻ सूदख़ोर है ✻ न जाने कितनों के पैसे खा के बैठा है ✻ झूटी क़स्में खाता है।

दे रिज़्क़े ह़लाल अज़ पए ग़ौसे आ'ज़म ह़राम माल से तू बचा या इलाही
हो अख़्लाक़ अच्छा हो किरदार सुथरा मुझे मुत्तक़ी तू बना या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मुलाज़िमीन की ग़ीबतों की 18 मिसालें

मुलाज़िमीन के बारे में बिला मस्लह़ते शर्ई बोले जाने वाले

गुनाहों भरे कलिमात व फ़िक़्रात की मिसालें ❁ कामचोर है ❁ सुस्त है ❁ ढीला है ❁ जब देखो छुट्टियां करता है ❁ हराम ख़ोर है ❁ दुकान में चोरियां करता है ❁ काम पर भेजो तो बहुत टाइम पास कर के आता है ❁ जब देखो बस फ़ोन पर लगा रहता है ❁ बहुत मुंह चढ़ा है ❁ बात बात पर नाराज़ हो जाता है ❁ गाहक को बराबर "डील" नहीं कर सकता ❁ बावला ❁ अहमक़ ❁ बुध्धू है ❁ इस के नख़्रे बढ़ गए हैं ❁ एक तो देर से आता है और ❁ जल्दी भागने की करता है ❁ दुकान में चोरी हो गई है मुझे फ़ुलां नौकर पर शक है।

दुकानदारों की आपसी ग़ीबत की 10 मिसालें

ऐ आशिक़ाने रसूल ! कारोबार में ऊंच नीच होती रहती है, अहादीसे मुबारका से मुस्तफ़ाद होता है कि गुनाहों के बाइस भी बे बरकती होती है। मुसल्मान को चाहिये कि अगर कभी बे बरकती हो या बिकरी में कमी आए तो अपने आ'माल का मुहासबा करे मगर बा'ज़ लोग ऐसे मौक़अ पर शैतान के बहकावे में आ कर बद गुमानियों, **ग़ीबतों** और तोहमतों पर उतर आते हैं और कुछ यूं कहते सुनाई देते हैं : ❁ लगता है फ़ुलां मेरे कारोबार की तरक़्क़ी देख नहीं सकता ❁ मेरे गाहक तोड़ता है ❁ जान बूझ कर दाम कम बता कर मेरे गाहक ख़राब कर देता है ❁ ख़ुद मिलावट वाला माल बेचता है मगर ❁ मेरे गाहक को बदज़न करने के लिये मेरी चीज़ों को मिलावट वाली कहता है ❁ बद मआशी कर के मेरी दुकान के आगे पथारा लगवा दिया है ❁ येह चाहता है कि बस किसी तरह मैं येह दुकान छोड़ दूं ❁ उस ने ऐसी नज़र लगा दी है कि गाहक क़रीब नहीं फटक्ता ❁ वोह सामने वाला

दुकानदार जब देखो हाथ में तस्बीह़ ले कर पढ़ पढ़ कर हमारी दुकान की त़रफ़ फूंकता रहता है ❁ उस दिन तो बा क़ाइ़दा मुसल्ला बिछा कर नमाज़ें पढ़े जा रहा था और दो एक बार तो हमारी दुकान की त़रफ़ देखा भी था हो न हो इसी ने **जादू** के ज़ोर से कारोबार की बन्दिश कर दी है ! **ऐ आ़शिक़ाने रसूल !** येह बात गिरह में बांध लीजिये कि ज़िक्रो अज़्कार, नमाज़ों और पाक कलामों के ज़रीए़ जादू हो ही नहीं सकता लिहाज़ा किसी मुसल्मान के बारे में बद गुमानियों, **ग़ीबतों** और तोह्मतों के गुनाहों में मत पड़िये, अपनी नज़र **अल्लाह** पाक पर रखिये ।

हुकूकुल इ़बाद ! आह ! होगा मेरा क्या ! करम मुझ पे कर दे करम या इलाही
बड़ी कोशिशें की गुनह छोड़ने की रहे आह ! नाकाम हम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 110)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾4﴿ गन पोइन्ट पर मोबाइल छीनने वाला नौ जवान

ग़ीबत करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मुश्क बार माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतें सीखने सिखाने के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **नेक आ'माल** के रिसाले के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **जाएज़ा ले कर** रिसाला पुर कर के हर माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये । सुन्नतें सीखने सिखाने के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में ख़ूब सफ़र कीजिये, आप की तरग़ीब के लिये

मदनी बहार गोश गुज़ार की जाती है, ज़रूरतन जुम्लों की नोक पलक संवारी गई है, चुनान्चे, एक इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के दीनी महोल में वाबस्ता होने से पहले शराबी थे, बे नमाज़ थे, चोरियां किया करते और गन पोइन्ट पर मोबाइल छीना करते थे, मज़ीद भी कई बुरी आदतों में मुब्तला थे, उन्हों ने अपनी ज़िन्दगी के चार साल इन्ही कामों में गुज़ार दिये, फिर उन्हें एक इस्लामी भाई ने मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरग़ीब दिलाई और वोह एक माह के मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बन गए मदनी क़ाफ़िले में उन्हें बहुत राहत मिली उन्हों ने गुनाहों से पक्की तौबा कर ली, फिर **अल्लाह** पाक के करम से उन को फ़ैज़ाने मदीना में तरबियती कोर्स करने की भी सआदत मिली ।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नेकी की दा'वत आम करने का जज़्बा

ऐ आशिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! मदनी क़ाफ़िलों की भी कैसी प्यारी मदनी बहारें हैं ! जहां मदनी क़ाफ़िले की बरकत से नेक बनने की सआदत मुयस्सर आती है वहां इस में नेकी की दा'वत आम करने का जज़्बा भी मिलता है और नेकी की दा'वत आम करने में सवाब ही सवाब है । इस ज़िम्न में चार अहादीसे मुबारका पेश की जाती हैं :

चार फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴿1﴾ नेकी की राह दिखाने वाला **नेकी** करने वाले की तरह है । (ترمذی، 5/305، حدیث:2679) ﴿2﴾ अगर **अल्लाह** पाक तुम्हारे ज़रीए किसी एक शख़्स को हिदायत अता फ़रमाए तो येह तुम्हारे लिये इस से अच्छा है कि तुम्हारे पास सुर्ख़ ऊंट हों । (مسلم، ص1311 حدیث:2406) ﴿3﴾ बेशक **अल्लाह**

पाक उस के फ़िरिश्ते, आस्मान और ज़मीन की मख़्लूक़ यहां तक कि च्यूंटियां अपने सूराख़ों में और मछलियां (पानी में) लोगों को **नेकी सिखाने वाले** पर ''सलात'' भेजते हैं। (ترمذی، 4/314، حدیث:2694) ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक की ''सलात'' से उस की **ख़ास रह़मत** और मख़्लूक़ की ''सलात'' से ख़ुसूसी दुआए रह़मत मुराद है। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/200) ﴾4﴿ बेहतरीन सदक़ा येह है कि मुसल्मान आदमी इल्म ह़ासिल करे फिर अपने मुसल्मान भाई को सिखाए। (ابن ماجہ، 1/158، حدیث:243)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾5﴿ इमामे आ'ज़म का अपने गुस्ताख़ के साथ ह़ुस्ने सुलूक

ह़ज़रते इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **मिना शरीफ़** की मस्जिदुल ख़ैफ़ में तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक शख़्स ने आ कर मस्अला पूछा आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस का जवाब दिया फिर किसी ने कहा कि येह ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के जवाब के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। इर्शाद फ़रमाया : इस मस्अले में ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इज्तिहादी ख़त़ा की। फिर एक और शख़्स आया उस ने अपना चेहरा छुपाया हुवा था, उस ने आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को गाली निकाली और कहा : तुम ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को ख़त़ाकार कहते हो। मगर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की क़ुव्वते बरदाश्त का येह आ़लम कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के चेहरे पर कोई ग़ुस्सा नज़र न आया। ह़ाज़िरीन त़ैश में आ कर उस गुस्ताख़ को मारने के लिये उठे, इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने लोगों को ठन्डा किया और उस शख़्स से फ़रमाया : ''ह़सन बसरी (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) से इज्तिहादी ग़लती हुई और ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द

رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने इस बाब में जो रिवायत की वोह सह़ीह़ है।" (المناقب للموفق، 9/2)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّین صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

ग़ुस्से पर क़ाबू के भी क्या ख़ूब फ़ज़ाइल हैं !

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! देखा आप ने ! करोड़ों ह़नफ़िय्यों के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते इमामे आ'ज़म इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का **सब्रो तह़म्मुल !** ह़ालां कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ चाहते तो लोग मार मार कर उस का भुरकस निकाल देते मगर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने ऐसा न होने दिया। जब कोई अपनी बे इ़ज़्ज़ती करे तो उ़मूमन ग़ुस्सा आ जाता है मगर ऐसे मौक़अ़ पर ग़ुस्से को रोक कर उस के फ़ज़ाइल का ह़क़दार बनना चाहिये। आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब **"बहारे शरीअ़त"** ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 188 ता 189 पर है : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : जो शख़्स अपनी ज़बान को मह़फ़ूज़ रखेगा, **अल्लाह** पाक उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा और जो अपने **ग़ुस्से** को रोकेगा, क़ियामत के दिन **अल्लाह** पाक अपना अ़ज़ाब उस से रोक देगा और जो **अल्लाह** (पाक) से उ़ज़्र करेगा, **अल्लाह** (पाक) उस के उ़ज़्र को क़बूल फ़रमाएगा। (شعب الایمان، 6/315، حدیث: 8311)

क्या इमामे आ'ज़म ने ह़सन बसरी की ग़ीबत की ?

मज़्कूरा ह़िकायत में इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की येह कह कर **ग़ीबत** की कि "उन्हों ने इज्तिहादी ख़त़ा की" मगर येह **जाइज़ ग़ीबत** थी क्यूं कि एक मुफ़्ती शरई मस्अले पर ख़त़ा करे तो दूसरा मुफ़्ती उस का रद कर सकता है।

चुनान्चे "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 16 सफ़ह़ा 178 ता 179 पर है : ह़दीस के रावियों और मुक़द्दमे (CASE) के गवाहों और मुसन्निफ़ीन पर जर्ह़ करना और उन के उ़यूब बयान करना जाइज़ है अगर रावियों की ख़राबियां बयान न की जाएं तो ह़दीसे सह़ीह़ और ग़ैरे सह़ीह़ में इम्तियाज़ न हो सकेगा। इसी त़रह़ मुसन्निफ़ीन के ह़ालात न बयान किये जाएं तो कुतुबे मोअ़ूतमदा व ग़ैरे मोअ़ूतमदा (या'नी क़ाबिले ए'तिमाद व ना क़ाबिले ए'तिमाद किताबों) में फ़र्क़ न रहेगा। गवाहों पर जर्ह़ न की जाए तो हुक़ूक़े मुस्लिमीन की निगह दाश्त (देखभाल) न हो सकेगी।

ह़सद की बीमारी बढ़ चली है, लड़ाई आपस में ठन गई है
शहा मुसल्मान हों मुनज़्ज़म, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा
फ़ुज़ूल गोई की निकले आ़दत, हो दूर बे जा हंसी की ख़स्लत
दुरूद पढ़ता रहूं मैं हर दम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 573, 574)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُالله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾6﴿ इमामे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने कभी दुश्मन की भी ग़ीबत नहीं की

एक मरतबा ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से कहा कि اَلْحَمْدُلِلّٰه "इमामे आ'ज़म **अबू ह़नीफ़ा** رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه **ग़ीबत** से इतना ज़ियादा बचते हैं कि मैं ने कभी उन को दुश्मन की **ग़ीबत** करते भी नहीं सुना !" (مرقاۃالمفاتیح،1/77)

आधे अहले ज़मीन से भी इमामे आ'ज़म की अ़क़्ल ज़ियादा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हज़रते इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की अ़क़्ल मन्दी के क्या कहने ! यक़ीनन अ़क़्ल मन्द वोही है जो अपने आप को **अल्लाह पाक व रसूल** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त में लगाए रखे वरना तो वोह बे वुकूफ़ ही क्या बे वुकूफ़ों का भी सरदार है जो मुसल्मानों की **ग़ीबतों** में पड़ कर अपनी नेकियां बरबाद कर के जहन्नम का हक़दार बनता रहे । आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, **''ह़िकायतें और नसीह़तें''** (649 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 332 पर है : ह़ज़रते अ़ली बिन आ़सिम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : अगर निस्फ़ (या'नी आधे) अहले ज़मीन की अ़क़्लों से इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की अ़क़्ल का मुवाज़ना किया जाए तो भी आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की अ़क़्ल ज़ियादा होगी । (تبیض الصحیفۃ فی مناقب الامام ابی حنیفۃ للسیوطی، ص128)

ग़ीबतें मत कीजिये पछताएंगे घुप अंधेरी क़ब्र में जब जाएंगे
सांप बिच्छू देख कर चिल्लाएंगे बे बसी होगी न कुछ कर पाएंगे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾7﴿ क़ब्र वाले ग़ीबत नहीं किया करते

आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, **''ह़िकायतें और नसीह़तें''** (649 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 477 पर है : ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक बार मुझे क़ब्रिस्तान जाना हुवा । वहां मैं ने ह़ज़रते बहलूल दाना رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को देखा कि एक क़ब्र के क़रीब बैठे मिट्टी में लोट पोट हो रहे हैं ! मैं ने यहां तशरीफ़ फ़रमा होने का सबब पूछा तो जवाब दिया : ''मैं

ऐसी क़ौम के पास हूं जो मुझे अज़िय्यत नहीं देती और अगर मैं यहां से ग़ाइब हो जाऊं तो मेरी **ग़ीबत** नहीं करती।" (الروض الفائق، ص246)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

سُبْحٰنَ اللہ ! **अल्लाह** वालों की भी क्या ख़ूब मदनी सोच हुवा करती है, वाक़ई क़ब्रिस्तान में वक़्त गुज़ारने वाले को अपनी मौत याद आने के साथ साथ **ग़ीबत** से बचत की भी सआ़दत नसीब होती है, न वोह किसी की **ग़ीबत** करते न क़ब्र वाले उस की **ग़ीबत** करते हैं।

मौत को मत भूलना पछताओगे क़ब्र में ऐ आ़सियो ! जब जाओगे
सांप बिच्छू देख कर घबराओगे भाग न हरगिज़ वहां से पाओगे

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾8﴿ मैं नमाज़ से भागता था

ग़ीबत करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतें सीखने सिखाने के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **नेक काम** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **जाएज़े** के ज़रीए़ नेक काम का रिसाला पुर कर के हर माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। आप की तरग़ीब के लिये **मदनी बहार** गोश गुज़ार की जाती है, चुनान्चे एक इस्लामी भाई बुरे दोस्तों की दोस्ती का शिकार थे, वोह दोस्त उन्हें चर्स और शराब पिलाते थे, रात को बड़े भाई के साथ दुकान पर काम करते और दिन में नशा कर के आवारा गर्दी

करते या **सारा दिन** घर में सोते रहते। रात जब वोह नशे की हालत में होते तो वालिदा रो रो कर समझातीं कि नशा करना छोड़ दो और उन के सुधरने की दुआएं किया करतीं, वालिद साहिब भी उन के नशा करने की वज्ह से गुस्से में रहते। दा'वते इस्लामी के एक मुबल्लिग़ की दुकान उन की दुकान के साथ ही थी, वोह उन्हें नमाज़ की दा'वत देते और मस्जिद में नमाज़ के लिये साथ ले जाने की कोशिश करते लेकिन वोह रास्ते से भाग कर वापस आ जाते। एक मर्तबा उसी मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी ने उन्हें तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र का ज़ेहन दिया, वोह तय्यार हो गए, मुबल्लिग़ ने उन्हें वेगन में बिठा कर **फ़ैज़ाने मदीना** रवाना कर दिया, वहां उन्हों ने दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की तो दिल पर अच्छा असर हुवा, वहीं से तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र किया, दाढ़ी सजाने की निय्यत की, सर पर इमामा शरीफ़ बांध लिया और आयिन्दा के लिये सच्चे दिल से बुरे कामों से तौबा कर ली। जब वोह मदनी क़ाफ़िले से घर वापस लौटे तो घर वाले बहुत खुश हुए। (तौबा से) पहले उन्हों ने मोबाइल में गाने और फ़िल्में रेकॉर्ड करवा रखी थीं वोह तमाम खुराफ़ात ख़त्म (Delete) करवा कर ना'तें रेकॉर्ड करवा लीं। बुरे दोस्तों की दोस्ती भी छोड़ दी। पहले रिक्शे पर दोस्तों के लिये शराब लेने जाते थे अब उसी रिक्शे पर इस्लामी भाइयों को सुवार कर के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में **फ़ैज़ाने मदीना** ले जाने लगे। नशा छोड़ने से पहले लोग उन्हें "नशई" कहते थे अब दा'वते इस्लामी वाला कहते हैं, अब घर वाले भी उन से खुश हैं। (اَلْحَمْدُ لِلّٰه) दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में आ कर उन्हें गुनाहों से बचने की सआ़दत मिली, हर महीने तीन दिन मदनी क़ाफ़िले में सफ़र

करने वाले बने, एक साल में नाज़िरा क़ुरआने करीम भी पढ़ लिया और एक ज़ैली हल्क़े की मुशावरत का निगरान बनने की सआ़दत भी नसीब हुई।

देखा आप ने ! **मदनी क़ाफ़िले** की बरकत ! रब्बुल इ़ज़्ज़त की इबादत से दूर रहने वाले की **ज़िन्दगी में नेकियों की बहार आ गई !** पहले वोह नमाज़ों से भागा करते थे, अब नमाज़ों की दा'वत देने वाले बन गए हैं, हर मुसल्मान को नमाज़ पढ़नी चाहिये اِنْ شَآءَاللّٰه नमाज़ की बरकत से बुराइयां भी छूट जाएंगी चुनान्चे **अल्लाह** करीम पारह 21 **सूरतुल अ़न्क़बूत** आयत नम्बर 45 में इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक नमाज़ मन्अ़ करती है बे हयाई और बुरी बात से।

इत्तिबाए नबवी में ख़ुश्क टहनी हिलाई

नमाज़ की फ़ज़ीलत के क्या कहने ! चुनान्चे आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब **''जन्नत में ले जाने वाले आ'माल''** (743 सफ़हात) सफ़हा 76 पर है : हज़रते अबू उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के साथ एक दरख़्त के नीचे खड़ा था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने उस दरख़्त की एक ख़ुश्क टहनी को पकड़ा और उसे हिलाया यहां तक कि उस के पत्ते झड़ गए फिर फ़रमाया : ऐ अबू उ़स्मान ! क्या तुम मुझ से नहीं पूछोगे कि मैं ने ऐसा क्यूं किया ? मैं ने पूछा कि आप ने ऐसा क्यूं किया ? तो फ़रमाया : एक मरतबा मैं रहमते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक दरख़्त के नीचे खड़ा था तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसी त़रह़ किया और उस दरख़्त की एक ख़ुश्क टहनी को पकड़ कर

हिलाया यहां तक कि उस के पत्ते झड़ गए फिर फ़रमाया : ऐ सलमान ! क्या तुम मुझ से नहीं पूछोगे कि मैं ने येह अ़मल क्यूं किया ? मैं ने अ़र्ज़ की : आप ने ऐसा क्यूं किया ? इर्शाद फ़रमाया : बेशक जब मुसल्मान अच्छी त़रह़ वुज़ू करता है और पांच नमाज़ें अदा करता है तो उस के गुनाह इस त़रह़ झड़ते हैं जिस त़रह़ येह पत्ते झड़ जाते हैं । फिर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका पढ़ी :

وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَیِ النَّهَارِ وَ زُلَفًا مِّنَ الَّیْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِیْنَ ﴿۱۱۴﴾

(پ12، ھود:114)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और नमाज़ क़ाइम रखो दिन के दोनों कनारों और कुछ रात के हिस्सों में बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं येह नसीह़त है नसीह़त मानने वालों को ।

(مسند امام احمد، 9/178، حدیث:23768)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُالله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴿9﴾ ग़ीबत के सबब बरज़ख़ में क़ैद

आ़शिक़ाने रसूल की मदनी त़हरीक **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, **''आंसूओं का दरिया''** (300 सफ़ह़ात) में है : फ़क़ीह अबुल ह़सन अ़ली बिन फ़रह़ून क़ुरतुबी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه अपनी किताब **''अज़्ज़ाहिर''** में फ़रमाते हैं : मैं ने 555 सिने हिजरी में ''शह्रे फ़ास'' में इन्तिक़ाल करने वाले अपने चचा को ख़्वाब में देखा कि घर के अन्दर तशरीफ़ लाए और दीवार से टेक लगा कर बैठ गए, मैं भी उन के सामने बैठ गया, मैं ने उन का बदला हुवा रंग देखा तो पूछा :

''चचाजान ! आप को आप के रब्बे करीम से क्या मिला ?'' फ़रमाया : ''बेटा ! मेहरबान से मेहरबानी के सिवा और क्या मिलता है, **अल्लाह** पाक ने **ग़ीबत** के इलावा हर चीज़ में मुझ पर नरमी फ़रमाई, मैं मरने के बा'द से ले कर अब तक **ग़ीबत** की वज्ह से हिरासत (या'नी क़ैद) में हूं, अब तक मेरा येह गुनाह मुआ़फ़ नहीं हुवा, बेटा ! मैं तुम्हें नसीहत करता हूं कि **ग़ीबत** व **चुग़ली** से बचते रहना क्यूं कि मैं ने आख़िरत में **ग़ीबत** से बढ़ कर किसी और चीज़ पर पकड़ नहीं देखी।'' येह कह कर वोह मुझ से रुख़्सत हो गए। (بحر الدموع، ص185)

घुप अंधेरा ही क्या वह़्शत का बसेरा होगा क़ब्र में कैसे अकेला मैं रहूंगा या रब !
गर कफ़न फाड़ के सांपों ने जमाया क़ब्ज़ा हाए बरबादी ! कहां जा के छुपूंगा या रब !
डंक मच्छर का भी मुझ से तो सहा जाता नहीं, कैसे मैं फिर
क़ब्र में बिच्छू के डंक आह सहूंगा या रब !
गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब !
अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 84, 85)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾10﴿ हिजड़े की मह़ब्बत में फंसने की वज्ह

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! ग़ीबत ने फ़ौतगी के बा'द फंसा कर रख दिया ! ग़ीबत, चुग़ली, बद गुमानी वग़ैरा ऐसी ना मुराद आफ़ात हैं कि बसा अवक़ात इन्सान को ह़ीने ह़यात या'नी जीते जी भी इबादात से दूर कर के मज़ीद गुनाहों के तन्दूर में झोंक देती हैं, चुनान्चे ह़ज़रते शैख़ अबुल क़ासिम क़ुशैरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल करते हैं कि शैख़ अबू जा'फ़र बल्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हमारे हां बल्ख़ में एक नौ

जवान था। यूं तो वोह ख़ूब इबादत व रियाज़त किया करता मगर ग़ीबत की आफ़त में मुब्तला था अक्सर कहता : फ़ुलां ऐसा है, फ़ुलां वैसा है। एक रोज़ मैं ने उसे लोगों के कपड़े धोने वाले हीजड़ों के पास से निकलता देखा, मैं ने उस से इस का सबब पूछा, कहने लगा : येह लोगों को बुरा भला कहने या'नी ग़ीबतें करने की सज़ा है कि मुझे इस हाल में डाल दिया गया है, अफ़्सोस ! मैं इन में से एक मुख़न्नस (या'नी हीजड़े) की महब्बत में मुब्तला हो गया हूं, उसी मुख़न्नस के इश्क़ की वज्ह से मैं इन धोबी हीजड़ों की ख़िदमत करता हूं और रब्बे जुल जलाल की त़रफ़ से पहले मुझे जो बात़िनी अह़वाल ह़ासिल थे सब जाते रहे। लिहाज़ा आप **अल्लाह** पाक से दुआ कीजिये कि मुझ पर रह़म फ़रमाए। (رسالہ قشیریہ، ص196)

कहीं ग़ीबत तो नहीं ले डूबी !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **ग़ीबत की तबाहकारी** ने एक इबादत व रियाज़त वाले नौ जवान को हिजड़े के इश्क़ में फंसा डाला ! **ग़ीबतों** की नुहूसतों के सबब वोह इबादतों की लज़्ज़तों से भी महरूम हो गया। यहां वोह इस्लामी भाई ग़ौर फ़रमाएं जिन्हें पहले सुन्नतों भरे बयानों, प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'तों, **ज़िक्रुल्लाह** और दुआओं में बहुत दिल जम्ई ह़ासिल होती थी मगर अब ऐसा नहीं बल्कि दिल हर दम गुनाहों की त़रफ़ माइल रहता है, उन्हें कहीं "**ग़ीबत**" की आफ़त तो नहीं ले डूबी ! सच्ची तौबा करें कि **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की रह़मत बहुत बड़ी है।

गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली मेरा ह़श्र में होगा क्या या इलाही !
येह दिल नेकियों में नहीं लग रहा है इबादत का दे दे मज़ा या इलाही !
मुझे बख़्श दे बे सबब या इलाही न करना कभी भी ग़ज़ब या इलाही

फ़रमाने आख़िरी नबी صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

"किसी नेक काम को हरगिज़ हक़ीर न जानो अगर्चे वोह तुम्हारा अपने भाई से ख़न्दा पेशानी से मिलना ही क्यूं न हो।"

(مسلم، ص1084، حدیث:6690)

978-969-722-252-0
01082257

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net